लिटिल किम की गुड़िया

किम यारोशेव

छोटी किम सबसे ज्यादा एक गुड़िया चाहती थी. कोई भी गुड़िया नहीं. वो मॉस्को स्टोर की खिड़की में पके गेहूं के रंग की बालों वाली एक विशेष गुड़िया चाहती थी.

लेकिन उसकी माँ सोचती थीं कि अगर उनकी लड़की बचपन में गुड़ियों के साथ खेलेगी तो वो बड़ी होकर कभी भी मजबूत और बहादुर नहीं बनेगी.

यह कहानी 1930 के दशक में रूस की पृष्ठभूमि पर आधारित है. कहानी में किम के दृढ़ विश्वास और अचरज की ताकत ने उसकी माँ को समझाया कि कभी-कभी बच्चों की बात मानना ही सबसे अच्छी बात होती है.

लिटिल किम की गुड़िया

किम यारोशेव

एक बार एक बहुत छोटी लड़की थी जो एक बड़े देश के बड़े शहर में रहती थी.

उस देश का नाम रूस था और शहर का नाम मास्को था. और उस छोटी लड़की का नाम किम था.
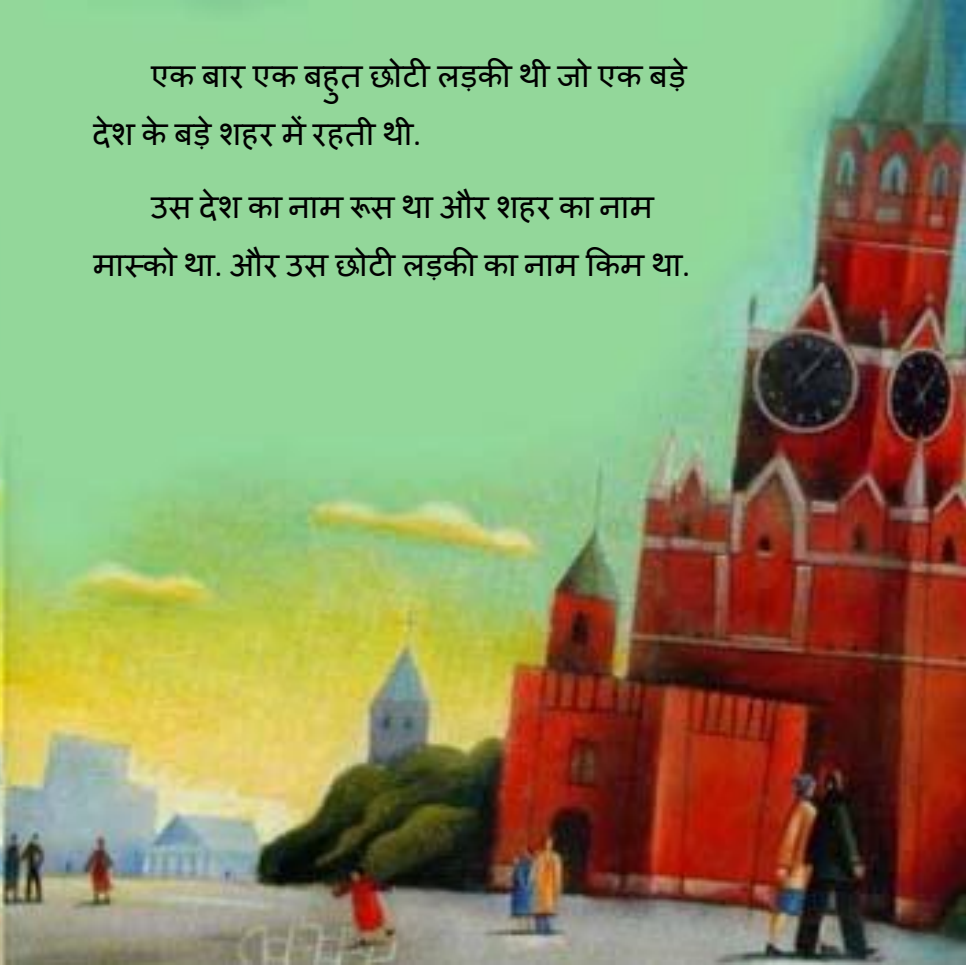
उसके माता-पिता उससे बहुत प्यार करते थे. जब वे काम से घर आते तो वे उसके लिए ज़रूर कुछ उपहार लाते : कोई चित्रों वाली किताब या बिल्डिंग ब्लॉक्स या रेत में खेलने के लिए एक छोटी बाल्टी और फावड़ा.

लेकिन किम दुनिया में एक ही चीज़ सबसे ज़्यादा चाहती थी - वो थी एक गुड़िया.
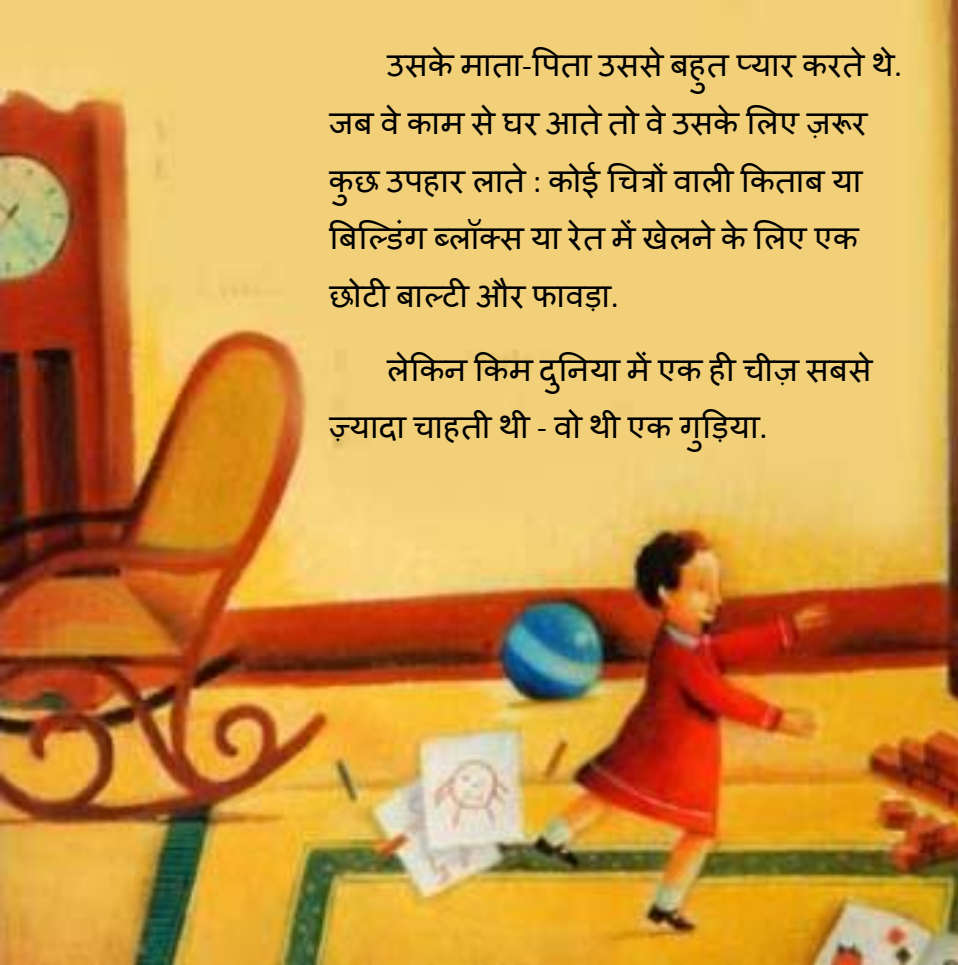
पार्क के रास्ते में एक खिलौनों की दुकान थी.

दुकान की प्रदर्शन खिड़की में गुड़िया को देखने के लिए नन्ही किम हमेशा वहां रुकती थी. वो उसे देखते थकती नहीं थी और अपनी आँखें फाड़-फाड़कर उस गुड़िया को घूरती थी.

खिड़की पर रखी एक गुड़िया अद्‌वितीय थी. वो चीनी मिट्टी की बनी थी. उसकी गहरी नीली आँखें थीं और उसके पके गेहूँ के रंग के बाल दो चोटियों में बंधे थे.
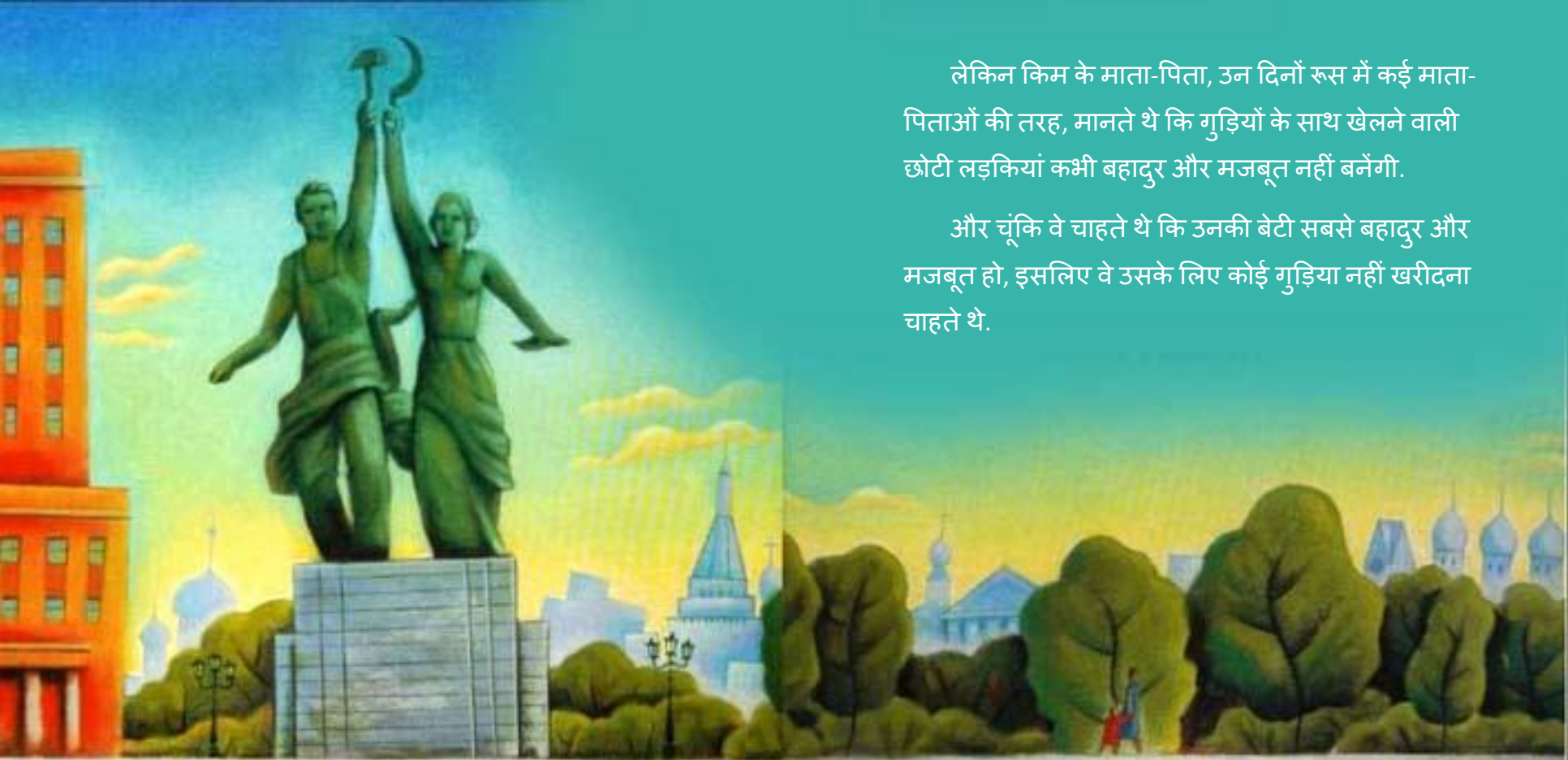
लेकिन किम के माता-पिता, उन दिनों रूस में कई माता-पिताओं की तरह, मानते थे कि गुड़ियों के साथ खेलने वाली छोटी लड़कियां कभी बहादुर और मजबूत नहीं बनेंगी.

और चूंकि वे चाहते थे कि उनकी बेटी सबसे बहादुर और मजबूत हो, इसलिए वे उसके लिए कोई गुड़िया नहीं खरीदना चाहते थे.

पर क्योंकि छोटी किम अपने दिल से उस गुड़िया चाहती थी इसलिए, उसने अपनी खुद की एक गुड़िया बना ली.

वो कोई असली गुड़िया नहीं थी. वो सिर्फ सूप का एक साधारण चम्मच था. किम ने उसपर एक रूमाल लपेटा और उसे नताशा नाम दिया. वो दिन भर नताशा के साथ खेलती रहती थी. वो नताशा को कहानियाँ सुनाती, नताशा के साथ खाना खाती और नताशा के साथ सोती थी.
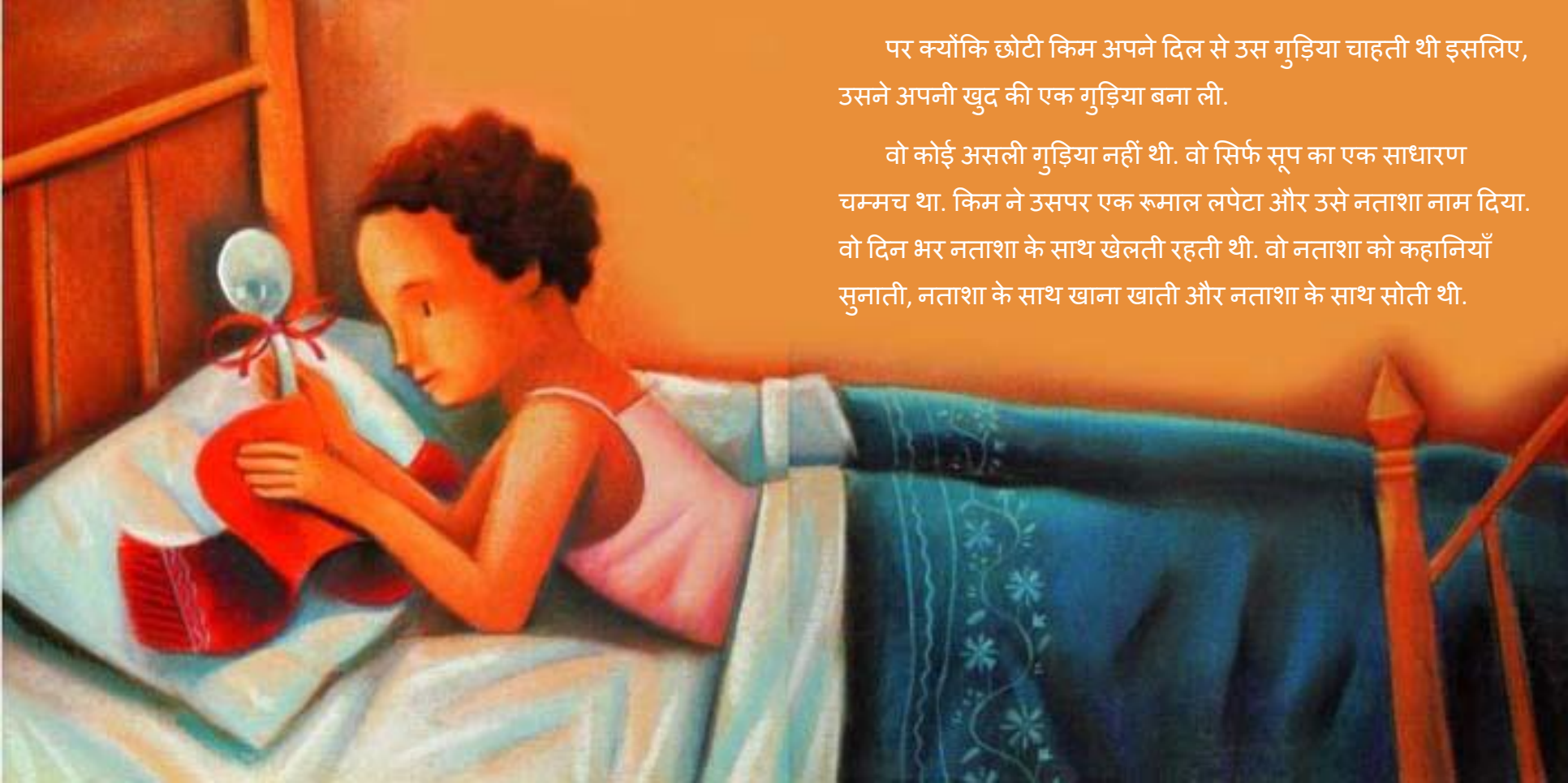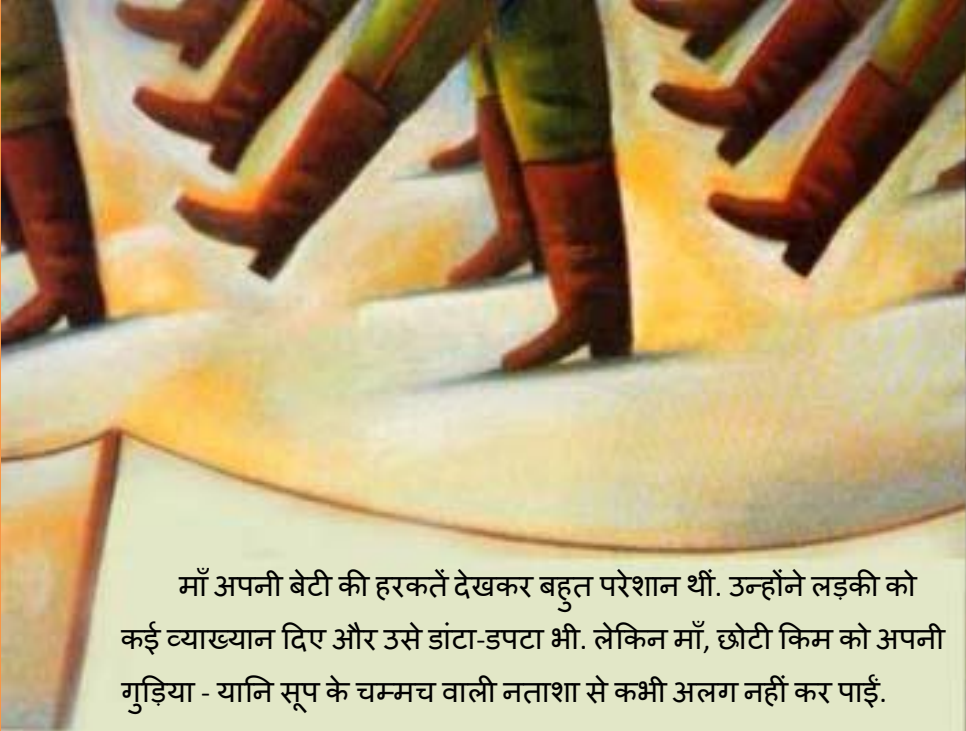
माँ अपनी बेटी की हरकतें देखकर बहुत परेशान थीं. उन्होंने लड़की को कई व्याख्यान दिए और उसे डांटा-डपटा भी. लेकिन माँ, छोटी किम को अपनी गुड़िया - यानि सूप के चम्मच वाली नताशा से कभी अलग नहीं कर पाईं.

इसलिए माँ ने छोटी किम को एक नए तरह के खिलौने से लुभाने की बात सोची. वो किम के लिए एक छोटी खिलौना राइफल खरीदकर लाईं. वो राइफल देखने में बिल्कुल वैसी ही थी जिसे सैनिक बड़े रेड स्क्वायर की परेड में मार्च करते हुए बड़े गर्व से अपने हाथ में उठाते थे.

राइफल में एक लकड़ी का हैंडल था जो एक स्कर्ट के आकार का था.

छोटी किम ने राइफल को अपने कलेजे से चिपकाया.

उसने राइफल को गर्म कंबल में लपेटा और उसे भी धीरे-धीरे गुड़िया जैसे ही डुलाया.

डुलाते समय उसने एक रूसी लोरी गाई, जो माँ को बिल्कुल नहीं भाई. माँ अब बहुत गुस्से में थीं!

लेकिन अचानक माँ के दिमाग में एक अजीब सा विचार कौंधा.

"ज़रा एक मिनट रुको," माँ ने खुद से कहा.

"छोटी किम मेरे गुस्से और डांट के बावजूद अपनी गुड़िया के साथ खेलती रहती है. यानी उसमें बहुत ताकत है. मैं उसके साहस की दाद मानती हूं!"

फिर उसके बाद माँ गर्व से मुस्कुराईं.

किम के अगले जन्मदिन पर, जिस दिन वह पांच साल की हुई उसके उपहारों में एक गुड़िया भी थी!

वो एक चीनी मिट्टी की बनी गुड़िया थी.

उसकी आँखें गहरी नीली थीं

और पके गेहूँ के रंग के बाल एक चोटी में बुने थे.

अब छोटी किम पूरी दुनिया में सबसे खुश लड़की थी!

समाप्त